

चुरी में लांबित नौकरी की मांग को लेकर हुई[†] त्रिपक्षीय वार्ता, नहीं निकला कोई नतीजा

14 मार्च तक नौकरी नहीं तो 15 से अनिश्चित काल के लिए बंद होगा चुरी खदान

प्रभात मत्र सवाददाता
बलमी : नमी स्मियो-

खलारा : चूरा पायोजना दाधिकारी कमल मांझी की मध्यक्षता में चूरी कार्यालय परिसर बिहार कोलियरी कामगार युनियन सीटू) के नेता और चूरी के रैयत मीणों के साथ त्रिपक्षीय वार्ता किया या। त्रिपक्षीय वार्ता में चूरी के बाकी चे रैयतों की नौकरी के मुद्दे पर हन चर्चा किया गया। इस बैठक में नियन के नेताओं ने कहा कि एक



साल पहले जीएम कार्यालय के सामने बी,सी,के,यू के बैनर तले छह दिनों तक धरना दिया गया था उसके बाद जीएम कार्यालय में वार्ता हुई

जिसमें यह कह कर धरना का समाप्ति किया गया की बहुत जल्द बाकी बचे लोगों को नौकरी दी जाएगी लेकिन अभी तक काम नहीं हुआ। इस पर चूरी परियोजना पदाधिकारी के द्वारा दो महीने का समय माँगा गया। रैयतों ने समय देने से इनकार कर दिया और कहा की आगर 14 मार्च तक रैयतों को नियुक्ति पत्र नहीं मिलता है, तो 15 मार्च से चूरी खदान को अनिश्चितकालीन के लिए

ज्ञारखण्ड सरकार,
गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग
ज्ञारखण्ड आन्दोलनकारी चिन्हितकरण आयोग

सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में डिजिटल कक्षाओं के लिए उचित सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

संपादकीय

जेल भेजती मधुशाला

भ्रष्टाचार विरोधी अंदोलन से निकले मनीष सिसोदिया को भ्रष्टाचार के आरोपों में गिरफ्तार होना पड़ा है, यह एक गंभीर विरोधाभास है और तकलीफदेह भी है। यदि अन्ना हजारे उस दौर में भ्रष्टाचार के खिलाफ 'महानायक' की भूमिका में थे, तो सिसोदिया भी अग्रिम पंक्ति के नायकों में एक थे। अरविंद केजरीवाल के अंतरंग मित्र के तौर पर भी उनकी छावि अद्भुत थी। दोनों ने मिल कर 'आम आदमी पार्टी' (आप) की राजनीति और रणनीति के

केजरीवाल मुख्यमंत्री बने, तो सिसोदिया को उपमुख्यमंत्री बनाकर तमाम महत्वपूर्ण विभाग सौंपे गए। सर्फ़ आबकारी नीति ने ही मोहब्बंग की स्थितियां पैदा कर दी। सिसोदिया भ्रष्ट हैं या उन्होंने शराब माफिया से 'मोटी दलाली' ली है अथवा जांच एजेंसियों से बहुत कुछ छिपाया जा रहा है, हम इन आरोपों की पुष्टि नहीं कर सकते। आरोपों को सच्चाई के निष्कर्ष तक ले जाना भी सीधीआई का दायित्व है, सिजकी रिमांड पर सिसोदिया हैं। अंतिम फैसला अदालत को सुनाना है, लेकिन भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन का एक नायक गिरफ्तार है, यह फैसला और कारनामा एकांगी लगता है। यह शोर मचाना भी फिजूल है कि प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा सर्फ़ केजरीवाल से डरते हैं। आत्म-मुग्धता की यह राजनीतिक ठीक नहीं है। फिलहाल मोदी और केजरीवाल की कोई राजनीतिक तुलना नहीं है। केजरीवाल देश के वैकल्पिक प्रधानमंत्री होने से कोरों दूर हैं। 'आप' की सत्ता मात्र डेढ़ राज्यों में है। एक पंजाब और दूसरा अद्धराज्य दिल्ली।

राजनातक तहत आप के नन्हा आप आपराधिक केस बनवा कर उन्हें जेलों में धकेल रहे हैं। यदि जनता 'आप' के ऐसे शोर पर गौर करती, तो दिल्ली और पंजाब में धमाकेदार जनादेश के बालोकसभा चुनाव में भी 'आप' के सांसद चुनती, लेकिन संसदीय चुनाव में केजरीवाल को 'शून्य' समर्थन मिला। जब देश के आधे राज्यों में 'आप' के सांसद चुने जाएंगे, तो केजरीवाल को गंभीर विकल्प माना जा सकता है। मौजूदा संदर्भ शराब घोटाले का है। दिल्ली सरकार की आबकारी नीति मंत्री-समृद्ध नवाई थी। मुख्यमंत्री केजरीवाल को उसकी जानकारी नहीं होगी या कई भूल हस्तक्षेप नहीं होगा, हम ऐसा मान ही नहीं सकते। बहरहाल जांच से सब कुछ सफाफ हो जाना चाहिए। दिल्ली में शराब की सरकारी दुकानें होती थीं, लेकिन नहीं शराब नीति में निजी कंपनियों को ठेके दिए गए। बल्कि एक बोतल खरीदो औंट एक मुस्त पाओ, यह अधियान भी लंबे वक्त तक चला। नीति में फेरबदल क्ये किया गया और फिर पुरानी नीति पर ही लौट आई सरकार, इसके कुछ स्पष्टीकरण तो सामने आए हैं, लेकिन ताकिक तथ्य सामने आना चाहिए। सिसोदिया ने नीति का मसविदा तय होने से पहले ही उसे शराब माफिया को भेज दिया था, सिसोदिया ने कई मोबाइल सेट वदले और कई सिम कार्ड इस्तेमाल किए, क्या वह कुछ छिपाना चाह रहे थे अथवा सबूत मिटाना चाहते थे। उन पर ये आरोप भी लगे हैं, जबाब सीबीआई के जरिए सार्वजनिक किया जा सकता है और सीबीआई जांच की सिफारिश उपराज्यपाल ने की है। बहरहाल सीबीआई पर जांच को छोड़ा जाए। आज हरिवंशराय बच्चन की 'मधुशाला' याद आ रही है जिसकी मौजूदा पंक्तियां इस तरह होनी चाहिए-'जेल भेजती मधुशाला।'

बाधकथा

जावन म सुख आर शात क लिए रामचारत मानस की इस बात का रखें ध्यान

हम देखत है कि सभा मनुष्या में बुद्धि का स्तर अलग-अलग होता है। उनकी निर्णय लेने की क्षमता में भी विभिन्नता पाया जाती है। कुछ लोग बुद्धिमान होते हैं और उन्हें समय पर सफलता मिलती है तो कुछ अन्य सही समय पर उपयुक्त फैसला न कर पाने के कारण होते हैं। जीत्रों में असफल हो जाते हैं। गीता में भगवान ने बुद्धि के आधार पर मनुष्यों की तीन श्रेणियां बताई हैं। उत्तम श्रेणी के सात्त्विक बुद्धि वाले मनुष्यों कर्तव्य-अकर्तव्य, बंधन-मोक्ष, भय-अभय, प्रवृत्ति मार्ग-निवृत्ति मार्ग आदि को ठीक प्रकार से जानते हैं। ऐसे संतुलित व्यक्तित्व वाले मनुष्यों का जीवन बहुत व्यवस्थित होता है। निश्चयात्मक बुद्धि का होने के कारण उनकी निर्णय लेने की क्षमता लक्ष्य प्राप्ति में सहायक भूमिका निभाती है। उनके सामने कोई बाधा आए तो वे उसका धैर्यपूर्वक सामना करते हैं। उससे घबराकर पलायन नहीं कर जाते। वे हमेशा वर्तमान में किए जाने वाले कार्यों पर ही अपना पूरा ध्यान केंद्रित रखते हैं। अतीत की घटनाओं का बार-बार चिंतन और उनका दूसरों के सामने वर्णन करके अपना और दूसरों का समय नहीं व्यर्थ करते और न ही भविष्य की घटनाओं को लेकर चिंतित रहते हैं। वे जानते हैं कि जिसने अपना वर्तमान सुधार लिया, उसका भविष्य भी ठीक ही रहेगा। मध्यम श्रेणी के राजसी बुद्धि वाले मनुष्य कर्तव्य और अकर्तव्य, धर्म और अधर्म आदि को वास्तविक रूप में नहीं जानते। ऐसे लोग अपने फायदे के लिए कर्म में प्रवृत्त होते हैं। इससे उनमें स्वाधीन बुद्धि एवं लोभ की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और वे अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किसी न किसी कार्य में लगे रहते हैं। अंदर ही अंदर अशांत रहने लगते हैं भोग और संग्रह में आसक्ति के कारण ऐसे लोगों की बुद्धि निश्चयात्मक न होकर अनंत शाखाओं वाली हो जाती है। स्वाभाविक ही वे अनेक लक्ष्यों के

एक साथ प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में उनकी बुद्धि में एकाग्रता नहीं रह पाती। उनका जीवन अव्यवस्थित होने लग जाता है। उनके व्यवहार में विषमता, पक्षपात, राग-द्वेष जैसे दोष आ जाते हैं। जैसे जल में मिट्ठी घुल जाने से उसमें स्वच्छता और निर्मलता नहीं रहती, वैसे ही राजसी बुद्धि वाले मनुष्यों की बुद्धि भी दूषित हो जाती है जिससे वे उचित निर्णय नहीं ले पाते तो सरी श्रेणों के तामसी बुद्धि वाले मनुष्य अधर्म को भी धर्म मानते हैं। इसके प्रकार वे अन्य तमाम वस्तुओं को भी विपरीत मान लेते हैं। जो कर्म नहीं करने चाहिए, उनका शास्त्रों में निषेध किया गया है, उनको वे पूरी तरपरत से करते हैं और जो करने योग्य शास्त्र विहित कर्म है, उनको नहीं करते अज्ञान के कारण सब कुछ शास्त्रों के विपरीत ही करते हैं। परिमामस्वरूप अपने जीवन में तरह-तरह के दुख प्राप्त करते हैं। उनका व्यवहार बुद्धिमान व्यक्तियों के ठीक विपरीत होता है। उनके द्वारा स्वयं के साथ साथ समाज का भी अहित होता है। रामचरित मानस के सुंदरकांड में विधीषण बुद्धि के विषय में रावण से कहते हैं 'सुमति कुमति सब के उत्तरहीं, नाथ पुरान निगम अस कहहीं। जहां सुपति तहं संपति नाना, जह कुमति तहं विपति निदाना।' हे नाथ, पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि सुमति (अच्छी बुद्धि) और कुमति (बुरी बुद्धि) सबके हृदय में रहती हैं जहां सुबुद्धि है वहां नाना प्रकार की संपदाएं (सुख की स्थिति) रहती हैं और

डा. वरिद्र भाटिया

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों एवं कंप्यूटर के माध्यम से इसका उपयोग किया जा सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी को ऑनलाइन लाइब्रेरी, इंटरनेट लाइब्रेरी, डिजिटल रिपोजिटरी या डिजिटल संग्रह के रूप में भी जाना जाता है। यह डिजिटल वस्तुओं का एक ऑनलाइन डेटाबेस है जिसमें टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, वीडियो, डिजिटल दस्तावेज के रूप में पुस्तकें शामिल हो सकती हैं। इस प्रकार की लाइब्रेरी को इंटरनेट के माध्यम से एक्सेस किया जा सकता है। प्रमुख अंतर यह है कि डिजिटल पुस्तकालय में संसाधन केवल मशीन-पठनीय रूप में उपलब्ध होते हैं। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में डिजिटल वस्तुओं का भंडार होगा, जैसे किताबें, लेख, छवियां, वीडियो और मल्टीमीडिया आदि।

८३

डिजिटल लाइब्रेरी कल्वर में बदलाव महत्वपूर्ण रोल निभा सकता है। खासतौर से छात्रों और उनकी डिजिटल शिक्षा पर फोकस करते हुए कई अहम कदम उठाए जा रहे हैं। इसी दिशा में नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी को प्रमुख माना जा रहा है। हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी 2023 को इस संबंध में घोषणा की कि बच्चों और किशोरों के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना की जाएगी ताकि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, भाषाओं, शैलियों और स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। डिजिटल लाइब्रेरी एक ऐसा पुस्तकालय है जिसमें पुस्तकों का संग्रह डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में होता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों एवं कंप्यूटर के माध्यम से इसका उपयोग किया जा सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी को ऑनलाइन लाइब्रेरी, इंटरनेट लाइब्रेरी, डिजिटल रिपोजिटरी या डिजिटल संग्रह के रूप में भी जाना जाता है। यह डिजिटल वस्तुओं का एक ऑनलाइन डेटाबेस है जिसमें टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, वीडियो, डिजिटल दस्तावेज़ के रूप में पुस्तके शामिल हो सकती हैं। इस प्रकार की लाइब्रेरी को इंटरनेट के माध्यम से एकसेस किया जा सकता है। प्रमुख अंतर यह है कि डिजिटल पुस्तकालय में संसाधन केवल मशीन-पठनीय रूप में उपलब्ध होते हैं। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में डिजिटल वस्तुओं का भंडार होगा, जैसे कितायें, लेख, छवियां, वीडियो और मल्टीमीडिया आदि। यह उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट के जरिए पहुंच के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी सचिना और ज्ञान तक पहुंच प्रदान करेगा। राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी की शुरुआत से देश भर के सभी उपयोगकर्ताओं लाभान्वित होंगे। जानकारी की आसान खोज और पुनरप्राप्ति के साथ-साथ जानकारी को सुरक्षित रखने की क्षमता से भविष्य की पीढ़ियों को एक स्थायी तरीका भी मिलेगा। वित्त मंत्री ने राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित करने का प्रस्ताव समावेशी विकास के हिस्से के रूप में दिया है। भारतीय छात्र आने वाले वर्ष में इसी नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की मदद से अपना ज्ञान वर्धन करेंगे। विशेषज्ञों का मत है कि डिजिटल युग में भारत की तरफ से राष्ट्र निर्माण की दिशा में यह कदम सबसे कारगर सबित होगा। चाँक बच्चों की सीखने की क्षमता अधिक होती है, ऐसे में उनके बढ़ते डिजिटल रुझान

के महान जर नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी मोल का पत्थर सावित सकती है। सरकार द्वारा बच्चों के लिए नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की सुविधा प्रो-देश में पंचायत और वार्ड स्तर पर देने की तरसामन आई है। अपने बजट भाषण में वित्त मंत्री ने भी कहा है कि राज्यों को बच्चों के लिए पंचायत और वार्ड स्तरों पर वर्चुअल पुस्तकालय स्थापित करने और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय संसाधनों तक पहुँचने के लिए बुनियादी ढांचा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ऐसे में राज्यों की ये जिम्मेदारी बनती है कि वे भी इस कार्य में रुचि लें और देश के विकास में योगदान दिया करें। डिजिटल साक्षरता में काम करने वाले गैर सरकार संगठनों के साथ सहयोग भी इस पहल का एक हिस्सा हो। वित्तीय साक्षरता को बढ़ाने के लिए वित्तीय क्षेत्र के नियाम और संगठनों को इन पुस्तकालयों को आयु-उपयुक्त प्राप्त सामग्री प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ज्ञात डिजिटल एपिग्राफी म्यूजियम में एक लाख प्राचीन शिलालेखों की भौजूद है। इन शिलालेखों के भंडार को एक डिजिटल एपिग्राफी में स्थापित किया जाएगा। रिपोजिटरी पहले चरण में एक लाख प्राचीन शिलालेखों का डिजिटलीकरण करेगी। इससे देश की शिक्षा की नई संस्कृति का निर्माण करने और महामारी के साथ सीखने के नुकसान की भरपाई की जा सकेगी। इस दिशा नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट और अन्य सोसाइटी को भौतिक पुस्तकालयों को क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेजी में पाठ्यचर्चयों संबंधी शीर्षक देने और भरने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। यह अध्ययन सामग्री की पहुँच के विस्तार के साथ छोटे बीच एक मजबूत पठन संस्कृति का भी निर्माण करेगा। सभी हैं कि सरकार के इस कदम से नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी

उपलब्धता की सुविधा से बच्चों को अधिक गुणवत्ता वाली किताबें पढ़ने का मौका मिल सकेगा। महज इतना ही नहीं, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में बच्चों को तमाम भाषाओं, भौगोलिक, शैलियों और स्तरों की पुस्तकें भी आसानी से उपलब्ध होंगी। उल्लेखनीय है कि शिक्षा क्षेत्र के कई हितधारक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बच्चों और किशोरों के लिए विभिन्न विषयों में सीखने के संसाधन उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा लाए गए इस प्रस्ताव से बेहद खुश हैं। इसलिए उन्होंने नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना को एक महान नीतिगत उपाय बताया है। भारत डिजिटल शिक्षा की दिशा में तेजी से प्रगति कर रहा है जिसमें स्कूल, विश्वविद्यालय और कॉलेज द्वारा डिजिटलीकरण को अपनान, इंटरनेट की पहुंच बढ़ाने और छात्रों की बढ़ती मांग से समर्थित हैं। देश में डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर सरकार के फोकस से डिजिटल शिक्षा को महत्वपूर्ण रूप से प्रेरित किया गया है जिसमें दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करना शामिल है। डिजिटल शिक्षा एक तकनीक या सीखने की विधि है जिसमें प्रौद्योगिकी और डिजिटल उपकरण शामिल हैं। यह एक नया और व्यापक तकनीकी क्षेत्र है जो किसी भी छात्र को ज्ञान प्राप्त करने और देश भर के किसी भी कोने से जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा। ऐसा माना जाता है कि भारत में डिजिटल शिक्षा और सीखने का भविष्य है। डिजिटल शिक्षा के जरिए कक्षाओं का शिक्षण अधिक मजेदार और संवादात्मक बन गया है। बच्चे इस पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। वह न केवल इसे सुन रहे हैं, बल्कि इसे स्क्रीन पर देख भी रहे हैं, जिससे उनके सीखने की क्षमता में काफी इजाफा हो रहा है। धनियों और दृश्यों के माध्यम से बच्चे आसानी से सीख रहे हैं। शैक्षणिक सामग्री छात्रों को विवरणों पर और अधिक ध्यान देने में मदद करती है जिससे वे अपनी गतिविधियों को अपने दम से पूरा करने में सक्षम होते हैं। ऑनलाइन स्क्रीन की सहायता से छात्र अपने भाषा कौशल में सुधार कर लेते हैं। इं-बुक से या ऑनलाइन अध्ययन सामग्री के जरिए वे नए शब्द सीखते हैं और अपनी शब्दावली का विस्तार करते हैं। एक छात्र अपने शिक्षक से कक्षा में प्रशिक्षण के दौरान प्रश्न पूछने से ज़िद्दिकता है। लेकिन डिजिटल शिक्षा के माध्यम से भले ही वह एक बार में कुछ भी न समझ पाए, फिर भी वे अपनी दुविध को मिटाने के लिए किरण्डिंग सत्र में शामिल हो करते हैं।

व्यवस्था में गृहण का जगह
भी से केवल उन चाराकारों के केवल प्रति
है। यों भी विशिष्ट संग्रहालयों और संग्रहालयों से लेकर एक

हाता सड़क परिवहन निगम को एक सड़क दसे में पीढ़ीति को इस आधार पर मुआवजा देने से इनकरने पर फटकार लगाई कि पीढ़ीति गृहिणी है। वह कोई पैंथी की कमाती, इस बजह से वह दिव्यांगता और अन्य सुविधाएँ लिए मिलने वाले मुआवजे की सुपात्र नहीं हैं। न्यायालय ने तर्क को अपमानजनक और समझ से परे बताया। न्यायालय कहा कि हादसे के लिए मुआवजा एक गृहिणी और कामकाजी हिला के लिए समान होना चाहिए। गृहिणी भी अपने परिवर्तन पूरा समय देती है। इस मामले में अदालत ने गृहिणी को मिलाने को राष्ट्र निर्माता बताते हुए बेहतर मुआवजा देने के देश दिया। दरअसल, घरेलू मोर्चे पर सब कुछ संभालने वजूद महिलाओं को कुछ न करने वाली भूमिका में देखा जाना नारे यहां आम बात है। घर की जिम्मेदारियाँ संभालने वाली हिलाओं की आय को मौद्रिक रूप में न आंके जाने के कानून तकी आपाधारी और योगदान को जरा कम करके ही देता है। सामाजिक-परिवारिक बताव से लेकर महिलाओं एवं बनने वाली नीतियों और योजनाओं की रूपरेखा तक पहुंच हें कमतर समझने की इस सोच का असर साफ दिखता है। यीती तो गृहिणियों के लिए कहीं कोई विशेष प्रावधान नजर न आता। जबकि गृहिणियां अपने से ज्यादा प्राथमिकता अपने उपर्युक्त विवाहीय विकास के लिए अपने से ज्यादा संबंधों को देती हैं। ऐसे में गृहिणी की भूमिका न्यायाधीश का यह कहना कि 'एक मां और पत्नी के रूप नका योगदान अमूल्य है', बाकई विचारणीय है। इसका सीधे देश यही है कि महिलाओं की आम-सी लगाने वाली इमिका को खास नजरिए से समझा जाना आवश्यक रतलब है कि 2020 में मुंबई हाईकोर्ट ने भी एक महत्वपूर्ण देश में एक महिला की सड़क दुर्घटना में हुई मौत के मामले सके परिजनों को मुआवजा देने का आदेश दिया था। अदालत वाहन दुर्घटना पर्याट के उस अदेश को खारिज कर दिया था। उसमें महिला के परिजनों को उसके गृहिणी होने की वजह आवजा देने से इनकार किया गया था। तब भी न्यायालय घट संवेदनशील टिप्पणी की थी कि 'गृहिणी के रूप में पहला की भूमिका एक परिवार में सबसे महत्वपूर्ण 3 नीतीयांगीय होती है। वास्तव में वह भावनात्मक रूप से परिवर्तन एक साथ रखती है। वह घर में पति का सहयोग करने वाली स्तंभ, अपने बच्चों के लिए एक मार्गदर्शक और परिवार नुरों के लिए आश्रय की तरह होती है। वह एक दिन की भी हुए एवं बिना दिन-रात काम करती है, भले वह कामकाजी महिला या न हो। हालांकि, वह जो काम करती है, उसकी वारहना नहीं होती और उसे नौकरी नहीं माना जाता है। एहला द्वारा घर में दी जाने वाली सेवाओं को मौद्रिक दृष्टि नना एक असंभव कार्य है, जो सैकड़ों घटकों से मिलकर 'करते हैं' कोरेना काल में गृहिणियों द्वारा न केवल अपनों, बल्कि अस-पड़ोस के लोगों तक भी मदद पहुंचाने के कई उदाहरण में आए थे। घर तक सिमटी जिंदगी के तकलीफदेह दौरा घरेलू महिलाओं ने हात आपाधारी से जड़ते हुए अपनों की भाला था। दरअसल, न्यायिक मामलों में आई ये टिप्पणी ही न कहीं समाज और परिवार को भी सजग करने वाली घरेलू महिलाओं की भागीदारी को लेकर सही मायने में जागरूक रहती है। यकीनन, श्रम की अनदेखी और उपेक्षापूर्ण बर्ताव चैंपर समग्र समाज में जागरूकता और संवेदनशीलता जैसे

के सगे-संबंधियों तक, सभी को उनकी इस सिमटी वाली भूमिका के विस्तृत दायित्वों को समझने का प्रयत्न ही चाहिए। गौरतलब है कि पिछले साल ऐसे ही एक गुवाहाटी उच्च न्यायालय ने कहा था कि 'गृहिणियां करतीं या वे घर में आर्थिक योगदान नहीं दर्तीं, यह समस्यापूर्ण है। कई वर्षों से ऐसी समझ का यथ है उन्होंने किया जाना चाहिए।' समझना मुश्किल नहीं कि उनके बहुआयामी भूमिका को सही ढंग से समझ बिना उन्हें सहयोग और सम्मान भी नहीं आ सकता। ऐसे में व्यवहार-विचार से उपजी अनदेखी उनके मान औंडे को ठेस पहुंचाती है। बावजूद इसके, अपनों-परायों वाले कमोबेश दुनिया के हर भूभाग की गृहिणियों के हिस्से जबकि सच तो यह है कि उनके अवैतनिक कायदे आंकना लगभग नामुमकिन है। अंतरराष्ट्रीय श्रम 2021 की रिपोर्ट बताती है कि विश्व में महिलाएं घरेलू कार्यों के लिए कुल धंटों का छिह्नतर फीसद समय एशियाई देशों में यह आंकड़ा अस्सी फीसद से भी हमारे देश में ऐसी महिलाओं की आवादी करीब बीस लाख महीने उनके अवैतनिक घरेलू कार्यों का मौद्रिक औसतन चालीस हजार करोड़ रुपए तक पहुंचता आवस्फैम की 'टाइम टू केयर' की रिपोर्ट कहती है कि भर में आधी आवादी साल भर में करीब दस हजार दिन के अवैतनिक घरेलू कार्य करती है। ऐसे में उनकी इसका मोल समझना और स्वीकार करना आवश्यक स्वीकार्यता और समझ अपने ही अंगन में उनके कान दिलाने की पहली शर्त है। यह कड़वा सच है कि गृह दूसरे पर निर्भर व्यक्तित्व के रूप में ही देखा जाता आर्थिक रूप से सक्षम और कामकाजी मोर्चों पर व्यवहार के जीवन की संभाल उनके ही हिस्से होती है। जिम्मेदारियां उठाने की व्यस्तता कामकाजी क्षेत्र उत्पादकता को ही घटाएंगी। ऐसे में परोक्ष रूप से अर्थोपार्जन की गतिविधियों में भागीदार होती है। हम समझने का भाव आज भी नदारद है। यही वजह दुनिया के हर हिस्से में घरेलू मोर्चे पर डटी महिला भूमिका का आर्थिक मूल्यांकन करने की बात उठ रही है। साल चीन में तलाक के मामले में आया एक फैसला चर्चित हुआ था। उसमें न्यायालय ने कहा था कि शाही महिला ने पति के घर में पांच साल काम किया, इस पांच लाख रुपए का मुआवजा मिलना चाहिए। ऐतिहासिक माना गया। उसके बाद वहाँ घर के मेहनताने को लेकर बहस भी शरू हुई। यह दुनिया हर समाज और हर परिवार से जुड़ा संवेदनशील दरअसल, अनगिनत जिम्मेदारियां निभाने वाली पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक भागीदारी की कई मोर्चों पर तकलीफदेह है। इस उपेक्षा के चलते हमें अवसाद और आम्भत्या के आंकड़े भी बढ़ रहे। श्रम और सहभागिता को मान न मिलना अपराध जन्म देता है। नतीजतन, बहुत-सी शारीरिक, व्याधियां भी उन्हें घेर लेती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड अनुसार 2019 में सर्वाधिक खुदकुशी करने वालों मजदूरों के बाद गृहिणियों के आंकड़े ही रहे।

नागरिक बोध

क्रोध मूखंता से शुरू होकर पश्चाताप पर खत्म होता है।

मानव अपमान पाकर क्रांति समाज पाकर पक्षिता नहीं

तन्हाने पकड़ा दूरा जाए
बात में आग बल्ला होकर अपने आवेश
है। क्रोधी की अिन्मां में स्वयं को जलाते
सोचते हैं कि क्रोध में इंसान इंसान न
हैवान बन जाता है। क्रोध करने का मत
गलती का दंड स्वयं को देना। इससे व
क्या हो सकती है। क्रोध मुख्यता से शुरू
पर खत्म होता है। क्रोध मनुष्य का
पागलन है। लोहा भले ही गरम हो जाए
तो ठंडा ही रहना चाहिए। गरम हथौड़ा
देता है। गोरखपुर के सहजनवा थाना

हात ह ता
समाहौ बात
प्रकट करते
ए यह भी नहीं
रहता बल्कि
बव हूँ दूसरे की
मी मुखता और
कर पश्चाताप
एक क्षणिक
पर हथौड़े को
मने को जला
व की घटना से
रग हाथा स कबूल किया क मन पात आर
बेटों को नींद मैं मार डाला। एक महिला
खोफनाक साजिश से दिल कांप उठता है। अब
निष्ठुर और निर्दय बनकर पूरे परिवार को मैं
उतार दिए जाते हैं। महिला ने अपने पति और
की गला रेतकर हत्या कर दी। संतकबीरनगर
मझगांव निवासी नीलम की दूसरी शादी थी।
पति की भी दूसरी शादी थी। उन्नाव सामूहिक
के बाद हत्या से रोगटे खड़ करने वाली घट
आई है। अनुसूचित जाति की किशोरी की
घटना से क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। कानपुर
घटना में दहेज की मांग थी। दहेज नहीं मिल

का कारण रहा हो। धावश म उठाया गया कदम ब
कभी गले की फांस बन जाता है। अतः स्वयं
नियंत्रण रखने की जरूरत है। उस व्यक्ति को शर्मिंजद
के साथ साथ जेल से बचने हेतु अधिदंड भोगना पड़ता
है। इन घटनाओं में अपराध करने वालों की जिंदगी
नकारात्मक हो जाती है। समाज में बढ़ रही घटनाओं
पीछे क्रोध का अहम भाग रहा है। क्रोध में मनुष्य अ
खो देता है। अब विचार कीजिये क्रोध में मनुष्य की
स्थिति हो जाती है? क्रोध में मनुष्य स्वयं पर नियंत्र
नहीं रख पाता है जिन लोगों की हत्या की गई है। उस
पीछे क्रोध का पापलनपन है। उसके बाद प्रयासित ह
है लेकिन बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध जीवन

१०८

विपक्ष का जाड़ना-ताड़ना हा सियासत

अंगर इस प्रकार जैसे योग्य कानूनों का सूचकांक होता, तो सेसेक्स और निफ्टी जैसे शेयर सूचकांक उसके सामने पानी भरते। भारत के विषयक की एकता को लेकर जिस तरह का उतार-चढ़ाव दैनिक खबरों में दिखाई देता है, वैसी उछाल और गिरावट के बारे में तो शेयर बाजार सपने में भी नहीं सोच सकता। इसे लेकर राजनीति में एक अन्योक्ति भी अक्सर सुनाइ जाती है— हर उस सप्ताह, जिसमें मंगलवार नहीं होता, विपक्षी एकता के प्रयासों की खबर नहीं आती। कई बार ऐसा भी लगता है कि इस देश में विपक्षी एकता को लोकशियों और उसे पंक्तवर करने के प्रयास ही असली राजनीति है, बाकी सब तो नीरस प्रेस विज्ञापनों हैं। कम या ज्यादा यह दुनिया के तकरीबन उन सभी लोकतंत्रों में होता है, जहां पर बहुलीय व्यवस्था है। चुनावों में और कई मुद्दों पर विपक्षी दल एक साथ आ जाते हैं और बहुलीय लोकतंत्र द्विदलीय व्यवस्था की तरह दिखने लगता है। इसको जरूरी भी माना जाता है। सत्ताधारी दल के नेता राज-राजेश्वर की तरह बर्ताव न करने लगे, इसके लिए एक मजबूत विपक्षी की जरूरत राजनीति शास्त्र के कक्षहरे में ही पढ़ा दी जाती है। फिर, विपक्ष ऐसा भी होना चाहिए, जो सत्ताधारी दल के सिर पर उसे अपदस्थ कर देने के खतरे की तरह हरदम खड़ा रहे। ऐसी जगहों में इसे एक सामान्य सी चीज माना जाता है। इसके विपरीत, भारतीय राजनीति के आदिकाल से विश्लेषकों और टिप्पणीकारों में विपक्षी एकता को लेकर उपहास का एक भाव रहा है। टूटा, बिखरा जैसे विशेषण उसके साथ जोड़े जाते रहे हैं और उसे 'भानुमती के कुनबे' जैसे ढेर सारे रूपकों से नवाजा जाता रहा है। आज भी मोटे तौर पर ऐसी ही सोच है। अक्सर हम सत्ताधारी दल को आदर्श मान लेते हैं और यह उम्मीद बांधते हैं कि उसे चुनौती देने के लिए विपक्ष को भी ठीक वैसा ही होना चाहिए। साल 2014 के बाद से तो ऐसा सोचने वालों की संख्या बढ़ी ही है। जब हम नई दिल्ली और कई राज्यों की सत्ता में बैठी भारतीय जनता पार्टी को देखते हैं, तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसमें गजब की समानता दिखाई देती है। कई बार लगता है कि जैसे सबके सब एक ही सांचे में ढाले हों या एक ही फैक्टरी से बनकर

निकले हों। देश के किसी भी भी ठीक वैसा ही होना चाहिए।
कोने से दिया गया हो, उसके हर कठुना तुला दान कर दियवा का
सारे नेताओं के बयानों में अद्भुत साम्य होता है। उनका बचाव भी एक
जैसा होता है और उनकी आक्रामकता भी। मानो सारी अभिव्यक्तियों
और धर्मगांधीओं की एक ही कंप्यूटर में प्रोसेसिंग की गई हो। विषय इस
तरह का नहीं है। वह हो भी नहीं सकता। जिनको हम विषयी दल कहते
हैं, उन सबका इतिहास अलग है और भ्रूणोल भी। उनकी जमीन जुदा है
और उनका आसमान भी एक-दूसरे से अलग है। कोई राष्ट्रीय है, कोई
प्रादेशिक, कोई क्षेत्रीय, तो किसी का आधार किसी उप-जाति विशेष
तक सीमित है। वे सब अलग-अलग अभिलाषाओं, अपेक्षाओं व
लालसाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए सबके मन अलग हैं,
बचन अलग और कर्म भी। हर एक की मथुरा तीन लोक से न्यारी है।
कुछ के बालहठ चंद खिलाना लौहों से बहुत आगे नहीं देख पाते। जब
हमारा विषय एकताबद्ध होने की बात करता है, तो उसके सामने एक
चुनौती ऐसे बालहठ को अपनी उस सेना में शामिल करने की होती है,
जिसे आगे बढ़कर नई दिल्ली के तपते सूरज को चुनौती देनी है। उनके
आपसी अंतर्विरोधी भी कम नहीं। कुछ दल हैं, जो एक-दूसरे के साथ
बैठ नहीं सकते, तो कुछ ऐसे हैं, जो एक-दूसरे को देख भी नहीं सकते।
एक राज्य में वे एक-दूसरे से गठजोड़ कर लेते हैं, तो दूसरे राज्य में
एक-दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ते हैं। इनदिनों एक और नई चीज़ हुई
है। हर दूसरे दल को तो सरा दल भारतीय जनता पार्टी की बी-टीम
लगाता है। वह उसे घोटकटवा मानता है, इसलिए उसके साथ खड़े होने
का तो सवाल ही नहीं। बेशक, ये सारी बातें निराश करने वाली लग
सकती हैं, लेकिन यही भारतीय राजनीति का यथार्थ है और इसे
स्वीकार करके ही हम किसी नीतीजे पर पहुंच सकते हैं। अपनी इन्हीं
खामियों और इन्हीं अंतर्विरोधों के साथ विषय ने भारतीय लोकतंत्र में

